

गिरिकूटेषुगिरिशिखरेषु ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ सूतानां पांडवीयानामिद्रसेनादीनां ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ ॥ इति विराटप० नैल० भारतभावदीपे पंचविंशो

गिरिकूटेषु तु गेषु नानाजनपदेषु च ॥ जनाकीर्णेषु देशेषु खर्वटेषु पुरेषु च ॥ १२ ॥ नरेंद्रबहुशो न्विष्टानैव विद्यश्च पांडवान् ॥ अत्यंतं वा विनष्टास्ते भद्रं तु भयं न र्षभ ॥
॥ १३ ॥ वर्त्मन्यन्वेष्यमाणा वैरथिनां रथिसत्तम ॥ न हि विद्योगतिं तेषां वासं हिनरसत्तम ॥ १४ ॥ किंचित्कालं मनुष्येन्द्रसूतानामनुगावयं ॥ मृगयित्वा यथान्यायं
वेदितार्थाः स्मृतत्त्वतः ॥ १५ ॥ प्राप्ता द्वा रवतीं सूता विना पार्थैः परंतप ॥ न तत्र कृष्णाराजेंद्रपांडवाश्च महाव्रताः ॥ १६ ॥ सर्वथा विप्रनष्टास्ते न मस्ते भरतर्षभ ॥ न हि
विद्योगतिं तेषां वासं वापि महात्मनां ॥ १७ ॥ पांडवानां प्रवृत्तिं च विद्यः कर्मापि वाकृतं ॥ सनः शाधि मनुष्येन्द्र अत ऊर्ध्वं विशांपते ॥ १८ ॥ अन्वेषणे पांडवानां भू-
यः किं करवामहे ॥ इमां च नः प्रियां वीरवाचं भद्रवतीं शृणु ॥ १९ ॥ येन त्रिगर्तानि हता बलेन महता नृप ॥ सूतेन राज्ञो मत्स्यस्य कीचकेन बलीयसा ॥ २० ॥ सह
तः पतितः शेते गंधर्वैर्निशि भारत ॥ अदृश्यमानैर्दुष्टात्मा भ्रातृभिः सहसोदरैः ॥ २१ ॥ प्रियमेतदुपश्रुत्य शत्रूणां च पराभवं ॥ कृतकृत्यश्च कौरव्यविधत्स्वयदनंत-
रं ॥ २२ ॥ इति श्रीमहाभा० विराटपर्वणि गोहरणपर्वणि चारप्रत्यागमने पंचविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥ वैशंपायन उवाच ततो दुर्योधनो राजा ज्ञात्वा तेषां वचस्तदा ॥
चिरमंतर्मना भूत्वा प्रत्युवाच स भासदः ॥ १ ॥ सुदुःखा खलु कार्याणां गतिं विज्ञातुं ततः ॥ तस्मात्सर्वे निरीक्षध्वं कनुते पांडवा गताः ॥ २ ॥ अल्पावशिष्टं कालस्य
गतभूयिष्ठमंततः ॥ तेषामज्ञातचर्यायामस्मिन् वर्षे त्रयोदशे ॥ ३ ॥ अस्य वर्षस्य शेषं चेद्वितीयुरिह पांडवाः ॥ निवृत्तसमयास्ते हि सत्यव्रतपरायणाः ॥ ४ ॥ क्षरं
तद्वना गेन्द्राः सर्वे त्याशी विषोपमाः ॥ दुःखा भवेयुः संरब्धाः कौरवान्प्रतिते ध्रुवं ॥ ५ ॥ सर्वे कालस्य वेत्तारः कृच्छ्ररूपधराः स्थिताः ॥ प्रविशेयुर्जितक्रोधास्तावदेव
पुनर्वनं ॥ ६ ॥ तस्मात्क्षिप्रं बुभूषध्वं यथा तेऽत्यंतमव्ययं ॥ राज्यं निर्वह्य मव्यग्रं निःसपत्नं चिरं भवेत् ॥ ७ ॥ अथाब्रवीत्ततः कर्णः क्षिप्रं गच्छंतु भारत ॥ अन्ये धूर्ता
नरा दक्षानिभृताः साधुकारिणः ॥ ८ ॥ चरंतु देशान्संवीताः स्फीतान् जनपदाकुलान् ॥ तत्र गोष्ठीषु रम्यासु सिद्धप्रव्रजितेषु च ॥ ९ ॥ परिचारेषु तीर्थेषु विविधे
ष्वाकरेषु च ॥ विज्ञातव्या मनुष्यैस्तैस्तर्कयासु विनीतया ॥ १० ॥

ध्यायः ॥ २५ ॥ ॥ ४ ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

विशेषु स्तथा बुभूषध्वं तान् प्राप्नुंश्छतेत्यर्थः तत्फलं चाह अत्यंतमित्यादिना ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥